शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

रोगों की जड़ आज की अर्थव्यवस्था

विनोबा

जहां जाता हूं, वहां लोग मुझे सुनाते हैं कि काला बाजार जोरों से चल रहा है, रिश्वतखोरी बढ़ रही है। लेकिन इसका मेरे दिल पर कुछ भी असर नहीं होता। मैं यह मानने को तैयार नहीं कि हिंदुस्तान का हृदय बिगड़ गया है। मैं यह भी नहीं मान सकता कि श्रीमानों के दिल बिगड़ गए हैं। हिंदुस्तान की भूमि अत्यंत सुजल, सुफल और मलयज-शीतल है। लेकिन यह कोई बड़ी संपत्ति नहीं है। हिंदुस्तान में जो पारमार्थिक संपत्ति है, उसकी कीमत सबसे ज्यादा है। चीनी लेखक लिन युतांग ने लिखा है कि हिंदुस्तान गाड इन्टाक्सिकेटेड, (ईश्वर-नशावान) मुल्क है। उनका यह वर्णन हिंदुस्तान की आज की जनता का यथार्थ चित्रण है। आज भी हमारी जनता ईश्वरपरायण ही है। लेकिन जो इतनी सारी अनीति फैली दीखती है, इसका मतलब यही है कि हिंदुस्तान की अर्थव्यवस्था बिगड़ गयी है, इंतजाम बिगड़ा है। इसीलिए लोग प्रवाह में पड़कर गलतियां कर जाते हैं। अगर हम आर्थिक व्यवस्था बदल सकें तो आप देखेंगे कि हिंदुस्तान के लोग सारी दुनिया में एक मिसाल पेश कर सकते हैं। भारत में भ्रष्टाचार का मुख्य कारण 'राष्ट्रीय चरित्र में दोष' है। इसे सुधारने का उपाय तालीम है। बच्चों को नैतिक और धार्मिक शिक्षा मिलनी चाहिए। तभी वे नेकी पर चलेंगे। दूसरी बात यह कि इसके प्रति जनमत तैयार करना चाहिए। मेरा मानना है कि पुराने जमाने में जितना क्रोध और जितनी काम-वासना थी, उतनी आज नहीं है। लेकिन इस जमाने में लोभ बढ़ा है। आर्थिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार चलता है। उसका कारण व्यवहार का मुख्य साधन 'पैसा' है। दूसरी गिरावट हम बर्दाश्त कर सकते हैं लेकिन नैतिक गिरावट हर्गिज बर्दाश्त नहीं कर सकते। लोगों के सामने नैतिक बात जाये। इसके सिवाय दूसरा कोई इलाज नहीं सूझता। एक इलाज यह भी है कि सरकार का जाब्ता हो। वह भी होना चाहिए। लेकिन लोगों के हाथ में यही है कि एक माहौल पैदा किया जाए, लोगों को समझाया जाए कि रिश्वतखोरी उसूली तौर पर गलत है। उससे न दीन सधता है न दुनिया। सभी सबको ठगना चाहेंगे तो ठगों का ही राज्य होगा। उस हालत में दुनिया का काम भी नहीं बनेगा। बुराई से दुनिया नहीं सधती, इस बात का पक्का यकीन हो जाए, तो इंसान कभी भी उसमें नहीं फंसेगा, गाफिल नहीं रहेगा। वह हमेशा चैकन्ना रहेगा कि हमारे हाथ से कोई गलत काम न हो। वह सोचेगा कि रिश्वत देने का या लेने का मोह नहीं होना चाहिए। फिर रिश्वत के खिलाफ माहौल पैदा होगा। उसके साथ-साथ सरकार के यंत्र में कोई ढिलाई हो, तो सरकार भी अपने यंत्र को कस सकती है। अलावा इसके गांव-गांव में सेवा करने वाले सेवक हों और उनका जाब्ता सब पर रहे। फिर मेरे जैसे लोग, जिनकी जबान में ताकत है और जिन पर लोगों का विश्वास है, वे भी रिश्वतखोरी के खिलाफ कहते रहें तो इन सबका हमला होने पर वह राक्षस नहीं टिकेगा। हमें उसके खिलाफ पूरा प्रयत्न करना होगा और ऐसा मोर्चा खड़ा करना होगा कि हम अपने समाज में ऐसी बुराई नहीं रहने देंगे। (साम्ययोगी समाज : विनोबा साहित्य खंड 18)